**Historicity Research Journal**
**Volume 1 | Issue 2 | Oct 2014**
**ISSN:- 2393-8900**

**Research Article**

# *भारतीय पुनर्जागरण तथा राजाराम मोहन राय*

*जावेद चॉंदसाहेब तांबोळी*

श्री संत दामाजी महाविद्यालय, मंगळवेढा, (इतिहास विभाग) सोलापूर.

***सारांश* :-**

उन्नीसवी शताब्दी भारतीय इतिहास की एक महत्त्व पूर्ण शताब्दी है। जिसमें भारतीय राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में सुधार लाने के लिए शिक्षित और धार्मिक भारतीयों का रचनात्मक प्रयत्न आरम्भ हुआ और उसके फलस्वरुप भारत में कई राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिवर्तन भी हुए। इस युग में पाश्चात्य सभ्यता के सम्पर्क से एक नई भावना और चेतना उत्पन्न हुई जिससे भारत का समस्त जीवन, साहित्य, शिक्षा और कला में प्रभावित हुए।

***प्रस्तावना* :-**

भारत के हिन्दुओं और मुसलमानो के सामाजिक जीवन में कई कुरीतियां आ गई थी जैसे साम्प्रदायिक ईष्या और द्वेष, जातिव्यवस्था और अस्पृश्यता, बाल–विवाह, बाल–हत्या, समुद्र यात्रा निषेध, सती प्रथा, दलित जातियों की दुर्दशा, विधवा–विवाह निषेध इत्यादि। आडम्बरपूर्ण मूर्ति–पुजा और अन्धविश्वास ही धार्मिक जीवन का रुप हो गया था। बहुत अधिक संख्या में भारतीय, विशेषकर दलित वर्ग के लोग, ईसाई बन रहे थे। कुछ भारतीयों ने ईसाई धर्म प्रचारकों की सफलता देखकर यह अनुभव किया कि यदि भारतीय धार्मिक और सामजिक जीवन में सुधार न किया गया तो सारा हिन्दू समाज छिन्न–भिन्न हो जायगा। इसलिए भी भारतीयोंने अपने धर्म और समाज को सुधारने के लिए कार्य किया।

***उद्देश* :**

1) ब्रम्ह समाज के कार्य को जानना ।
2) भारतीय पुनर्जागरण में राजा राममोहन राय के योगदान को जानना ।
3) उन्नीसवी शताब्दी के भारतीय धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन में ब्रम्हसमाज और महान व्यक्तीयों का कार्य पहचनना ।

***अ) राजा राममोहन राय के विचार* :**

राजा राममोहन राय महान धर्म–सुधारक थे। अंग्रेजी, फारसी, अरबी, संस्कृत, ग्रीक, लेटिन, हिब्रू, फ्रेंच आदि भाषाओं के जानकार होने के कारण उन्होंने अनेक धर्मो का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पंहुचे कि सभी धमों मे एक ईश्वर का सिध्दांत प्रचलित है। वे सभी धर्मों की मौलिक एकता पर विश्वास रखते थे। वे धर्म को विश्वास की वस्तु समझते थे। वे भारतीय सामाजिक और धार्मिक दोषों से परिचित थे और उनका सुधार चाहते थे। इसलिए उन्होंने ब्रम्ह समाज की स्थापना की। वे धार्मिक स्वतन्त्रता और सहिष्णुता के आचरण करते थे।[1] वे उसकी अभिव्यक्ति धर्म, नैतिकता, सामाजिक व्यवस्था और राजनीति में चाहते थे। वे सभी धर्मो की मौलिक एकता और सच्चाई में विश्वास रखते थे। उनका कहना था कि लोग सभी धर्मों का आदर करे और किसी की निन्दा न करें। उनके हदय में अन्धविश्वास, मूर्ति–पूजा, धार्मिक कर्मकाण्ड आदि का कोई स्थान न था। उन्होंने हिन्दू धर्म के सिध्दांत को स्वीकार किया कि मनुष्य देवता तुल्य है और अपने अच्छे कामों से काफी उपर उठ सकता है। उन्होंने हिन्दुओ को ईश्वर की एकता पर विश्वास करने और निरर्थक कर्मकाण्डों को त्यागने के लिए कहा।[2]

### ब) राजा राममोहन के सामाजिक कार्य :

राजा राममोहन राय एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने सती प्रथा को बन्द करने पर जोर दिया और उसमें सफल भी हुऐ। 1829 मे लॉर्ड विलियम बेन्टिंक के कानून बनाकर सती प्रथा को अवैध घोषित कर दिया।[3] राममोहन राय स्त्रियों को पैतृक सम्पति में अधिकार दिलाना चाहते थे। वे विधवा–विवाह के समर्थक थे ओर बहु–विवाह के विरोधी थे। वे स्त्रियों के शिक्षा के भी समर्थक थे। सब प्रकार सेवेस्त्रियों का स्थान ऊँचा करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि जाति प्रथा का उन्मुलन करके ही स्वतन्त्रता और समानता के आधार पर लोकतांत्रिक समाज की स्थापना की जा सकती है।[4] राममोहन राय बडे राजनीतिक विचारक थे। वे स्वतन्त्रता के बडे समर्थक थे। वे भारत की आजादी चाहते थे परन्तु शीघ्र नहीं ताकि, भारतीय अंग्रेजों से बहुत कुछ सीख सके। वे महान देशभक्त थे। देशभक्ती की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी।[5]

राममोहन राय शिक्षा शास्त्री थे। शिक्षा के क्षेत्र में उनके विचार क्रांतिकारी थे। यदयपि वे पश्चिमी साहित्य और शिक्षा के बडे समर्थक थे तथापि उन्हें प्राचीन भारतीय साहित्य के प्रति बडी निष्ठा थी। वे समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता के अन्तर्राष्ट्रीयता के महत्व जानते थे। उन्हें विश्वमानवता के विचार का सन्देशवाहक कहा गया है।[6]

### क) ब्रम्ह समाज :

राजा राममोहन राय ने 1828 में ब्रम्ह समाज की स्थापना की। वह उनकी 1814 ई. की आत्मीय सभा की पराकोटि थी। ब्रम्हसमाज के मुख्य सिध्दांत निम्न थे, ईश्वर एक है। वह विश्व का पालक और रक्षक है। ईश्वर निराकार है। वह शाश्वत, अदृश्य और सत्य है। उसी ईश्वर की पूजा करनी चाहिए । उसमें वर्ण अथवा जाति सम्बन्ध का कोई भेद नहीं है। ईश्वर पूजा संन्यास, मूर्ति पूजा और कर्मकाण्ड के द्वारा नहीं बल्कि आध्यात्मिक रुप से ही जानी चाहिए । पाप का त्याग और पाप कर्म से पश्चाताप ही मनुष्य को मोक्ष की ओर ले जा सकता है।[7]

राजा राममोहन राय की असामायिक मृत्यू 1833 में हा गई। उससे ब्रम्ह समाज आन्दोलन को धक्का लगा परन्तु उसकी प्रगति न रुकी। राजा राममोहन राय के अधुरे कार्य को महर्षि देवेन्द्रनाथ टागौर और केशवचन्द्र सेन ने आगे बढाया 1843 ई. मे महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रम्हसमाज का पुनर्गठन किया। उन्होंने विधवा विवाह का प्रचार किया और नारी शिक्षा पर जोर दिया। अपने अनुयायियों को मूर्तिपूजा, तीर्थ–यात्रा, कर्मकाण्ड और प्रायश्चित से रोका। उन्होंने केशवचन्द्र सेन को ब्रम्ह समाज का आचार्य नियुक्त किया। केशवचन्द्र सेन की शक्ति, वाकपटुता और उदारवादी विचारों ने ब्रम्हसमाज के आन्दोलन को लोकप्रिय बना दिया और शीघ्र ही उसकी शाखाए बंगाल से बाहर उत्तर प्रदेश पंजाब महाराष्ट्र और मद्रास में खुल गई। 1865 में बंगालमें ही 65 शाखाएं थी। लेकिन ब्रम्हसमाज में फुट पड गई। समाज में जो लोग तीव्र परिवर्तन के विरोधी थे उन्हे केशवचन्द्र के विचार बहुत उग्र मालूम हुए । केशव और उसके समर्थक अन्तर्जातीय विवाहों के पक्ष में थे। केशवचन्द्र हिन्दू धर्म को संकीर्ण मानते थे और संस्कृत के मूल पाठों के प्रयोग को भी ठीक नही समझते थे। उन्होंने यज्ञोपवीत पहनने के विरुध्द भी प्रचार किया और सभी धर्मो की धर्म पुस्तकों का पाठ उनकी सभाओं में होने लगा 1865 में देवेन्द्रनाथ टैगोर ने केशवचन्द्र को आचार्य को पदवी से हटा दिया। 1866 में केशवचन्द्र और उसके अनुयायियों ने "ब्रम्ह समाज ऑफ इण्डिया" की स्थापना की और देवेन्द्रनाथ का ब्रम्हसमाज "आदि ब्रम्ह समाज" कहलाने लगा।[8]

केशवचन्द्र के नये संगठन का विकास बडे जोरों से हुआ। वह केवल एक सुधारवादी सम्प्रदाय ही नहीं बना रहना चाहता था बल्कि एक सार्वभौमिक धार्मिक संस्था का रुपलेना चाहता था। केशवचन्द्र ने जातीय व्यवस्था को किसी भी रुप में मानने से इन्कार कर दिया। मानव में धार्मिक भाव उत्तेजित करने के लिए उसने प्रार्थना में भक्ति तत्वों को मिलाया। संकीर्तन उसके ब्रम्ह समाज का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया। यह आन्दोलन लोकप्रिय हो गया।[9]

### उपसंहार :

राजा राममोहन राय एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने स्त्रियों को अपना अधिकार दिलवाया। उनकें विचारो में स्वतन्त्रता, सहिष्णुता, सच्चाई, समानता दिखाई देती है । उनके विचारों से भारतीय जीवन, साहित्य, शिक्षा और कला को प्रभावित किया । 50 वर्ष ब्रम्ह समाजने बंगाल और महाराष्ट्र के लोगों को जागृत किया और उनके जीवन पर काफी प्रभाव रहा । ब्रम्ह समाज ने हिन्दुओं को ईसाई बननेसे रोका और हिन्दुधर्म में नई जागृति उत्पन्न की ।

यह बात स्मरणीय है कि राजा राममोहन राय ने अपना जीवन सुधारणावादी विचारों से परिपूर्ण किया इसलिए भारतीय पुनर्जागरण के "प्रभात तारा" उन्हें कहा जाता है । उन्होंने अपनें विचारों को मूर्त स्वरुप दिया और अंग्रेज सरकार को भारतीय कुरीतियों को दूर करने के लिए कानून का आधार लिये गए । आज भी हमें इस महान समाजसुधारक के कार्य को समाज से परिचित करना चाहिए ।

## संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. विदयाधर महाजनः आधुनिक भारत का इतिहास
2. Chatterjee, Ramanand : Ram Mohan Roy and Modern India
3. Farquhar, J. N. : Modern Religious Movement in India
4. Parekh, Manilal : The Brahmo Samaj, 1929
5. Ranade M. C. Religious and Social Reform
6. Sastri, sivanath : History of the Brahmo Samaj.
7. Tara Chand : History of the Freedom Movement in India, Vol. I.
8.डॉ. बी. एल. ग्रोवर : आधुनिक भारताचा इतिहास. डॉ. एन. के. बेल्हेकर
9. Roberts. P. E : History of British India.